भ्रष्ट एसपी के खिलाफ बार की हड़ताल

पलवल (म.मो.) जिला बार एसोसिएशन पलवल और फरीदाबाद दोनो मिलकर 27 अक्टूबर को होने वाली गृहमंत्री अमित शाह की रैली के विरुद्ध काली पट्टी बांधकर उनका विरोध करेगी। विरोध का मूल कारण यहां का एसपी राजेश दुग्गल है। इनकी पत्नी सिरसा से सांसद निर्वाचित हैं। वकीलों का आरोप है कि सांसद पत्नी के बूते एसपी दुग्गल आम जनता तो क्या सीएम और पीएम को भी कुछ नहीं समझते। इसी धौंस में वे पूरी बेशर्मी से खुला खा रहें हैं और नंगा नहा रहे हैं।

पलवल में अवैध वसूली करके अपनी आय से अधिक संपत्ति का भी परिचायक है। इसने जिला पलवल में वकीलों में गुटबंदी करके गोली चलवाने के पूरे इंतजाम कर रखे हैं। इस उच्च अधिकारी पलवल ने आपराधिक प्रवृत्ति के व्यक्तियों को शरण में लेकर उनसे उल्टे सीधे काले धंधे और अवैध अपराध कराने का काम किया है। पलवल का यह उच्च अधिकारी पहला ऐसा व्यक्ति है जिसके कार्यकाल में छः पुलिसकर्मियों ने इसकी ओछी विचारधारा की वजह से आत्महत्या की हैऔर उनकी लाशों को बेचकर सम्बन्धित गुनहगारों की जमानत तक करा दी है। समझा जाता है कि उन अपराधियों से या मोटे पैसे तो खाए ही हैं, उनसे आगे और भी अपराध कराए जाने की सम्भावना है। इनके काले कारनामों का विरोध करने वाले वकीलों के खिलाफ भी दुग्गल झूठे मुकदमे दर्ज कराने में नहीं हिचकते। है ऐसे मामलों की एक लम्बी लिस्ट है। इसका ताजा तरीण उदाहरण एफआईआर नंबर 649 हुई है ।

जिले के एसपी होने के नाते वे अपने मातहतों के तबादले एवं तैनातियों के अधिकार का खुल कर दुरुपयोग कर रहे हैं, बल्कि यों कहा जाय कि खुल कर बेंच रहें हैं। लगभग हर थाने चौकी व नाके तक पर तैनाती के दाम तय हैं। इनके माध्यम से ही हफ्ता वसूली कराई जाती है, संदर्वस सुधी पाठक 'मजदूर मोर्चा' उस खबर को याद करें जिसमें गांव फिरोज पुर का एक युवा मोटरसाइकिल सवार हाइवे पर ट्रेक से कुचल कर भरा था।उसकी मौत के पीछे भी असली कारण नाकेबंदी द्वारा ट्रकों से वसूली था। जातिगत वैमनस्यता को बढ़ावा देने के लिए एससी/एसटी एक्ट का दुरुपयोग करते हुए बड़ी संख्या में झूठे मुकदमे दर्ज किए गए हैं। लोगों में चर्चा के अनुसार यह संख्या 100 के करीब बताई जा रही है।

दुग्गल के उक्त आपराधिक कृत्यों के मद्देनजर पलवल बार एसोसिएशन ने सरकार से इनके तबादले की मांग के साथ साथ इन पर लगे आरोपों की जांच की मांग भी की है।जब तक मांगे पूरी नहीं होती तब तक वकीलों ने हड़ताल पर रहने का निर्णय किया है। इसकी शुरुआत 27 अक्टूबर को अमितशाह की फरीदाबाद में होने वाली के बहिष्कार से कर दी है। इसके अलावा दुग्गल वह उनकी सांसद पत्नी सुनीता के पुतले फुंकने का एलान भी किया गया है।

पलवल में इस अधिकारी की यह दूसरी बार पोस्टिंग है और यह छोटे पुलिस मुलाजिमों की जातिगत आधार पर इंक्वायरी खोल कर उनसे मोटे पैसे वसूल कर इंक्वायरी बंद करता है। इसकी इलेक्शन कमिशन में बार-बार शिकायत होती है और यह बैक डेट में मेडिकल बनवाकर छुट्टी पर चला जाता है। जिसमें इसके साथ चंडीगढ़ स्थित उच्च अधिकारी भी शामिल है उसकी जांच भी होनी चाहिए। आमजन के अनुसार इसके पास एक कोठी गुरुग्राम में एक हिसार में एक दिल्ली में और एक सिरसा में है। उनकी भी जांच होनी चाहिए तथा इसकी एनडीपीएस के केस में मोटे पैसे लेकर अपराधियों को फायदा पहुंचाने की भी शिकायत है।

दुग्गल साहब जब भी जिले में तैनात होते हैं तो ये साहब खींचने की रफ्तार इतनी तेज कर देते हैं कि किसी भी जिले में दो तीन महीने से ज्यादा नहीं टिक पाते। किसी भी जिले में टिकने का अब तक का सबसे बड़ा रिकार्ड इन्होंने पलवल में ही बनाया है।

राजेश दुग्गल, एसपी पलवल

लूट के साथ-साथ संसाधनों का दुरुपयोग

महकमे के भीतरी सूत्र बताते हैं कि दुग्गल साहब सरकारी वाहन के जरिये रोजाना गुड़गांव स्थित अपने साले सुमित जो गुड़गांव नगर निगम में ज्वाइंट कमिश्नर है के यहां दूध भिजवाते हैं, इसी तरह सांसद पत्नी के दिल्ली आवास पर भी दूध की सप्लाई की जाती है। जितने का दूध नहीं उससे कई गुणा अधिक उसके भिजवाने पर खर्चा हो जाता है। इसी को तो कहते हैं माल-ए-मुफ्त, दिल-ए-बेरहम। दुग्गल साहब ये फिजूल खर्ची केवल इसलिये कर पा रहे हैं क्योंकि इसका बोझ सीधे सरकार यानी करदाता पर पड़ रहा है।

सूत्र बताते हैं कि दिल्ली, गुड़गांव, हिसार व सिरसा में इन्होंने अपने जो घर बना रखे हैं उनमें काम करने के लिये भी पलवल से ही विभागीय कर्मचारियों को तैनात कर रखा है। एक ओर तो संसाधनों की कमी का रोना रोया जाता है। वहीं दूसरी ओर इतनी बेदर्दी के साथ सरकारी संसाधनों का खुला दुरुपयोग किया जा रहा है। क्या यह सब उच्चाधिकारियों व खट्टर तथा विज को नजर नहीं आता?

सांप की रस्सी, रस्सी का सांप बना देती है पुलिस

रिश्वत मिले तो क्रिमिनल केस नहीं तो सिविल

करनाल (म.मो.) स्थानीय व्यापारी पुरुषोत्तम बंसल ने सन् 2006 में गांव रायपुर रोड़ा (थाना इन्द्री) स्थित 1000 वर्ग गज़ ज़मीन का सौदा 29 लाख रुपये में किया था। 11 लाख रुपये देकर बंसल ने प्लॉट पर अपने ताले लगा कर कब्जा ले लिया था। करार के मुताबिक विक्रेता को बैंक का आठ-नौ लाख कर्ज चुका कर बंसल के नाम रजिस्ट्री करा कर शेष 18 लाख वसूलने थे। लेकिन इसके विपरीत विक्रेता ने बैंक का कर्ज लौटाने की बजाय गुंडागर्दी से प्लॉट के ताले तोड़कर, दिया हुआ कब्जा वापस ले लिया।

क्रेता बंसल ने स्थानीय अदालत में 2007 में केस डाला और जीत गये। विक्रेता सेशन कोर्ट में गया और हार गया। इस पर कोर्ट के आदेश पर बंसल ने बैंक का पूरा भुगतान करके शेष रकम विक्रेता को अदा कर दी जिसके बदले 2012 में कोर्ट ने बंसल के नाम रजिस्ट्री करा दी। विक्रेता ने इसके विरुद्ध हाई कोर्ट जाकर स्थगन आदेश प्राप्त कर लिया। करीब साल भर बाद स्थगन आदेश भी हट गया और बंसल यहां भी 2018 में केस जीत गये।

बंसल कब्जा लेने मौके पर गये तो पाया कि वहां पर काफ़ी भारी-भरकम मशीनें आदि चल रही थीं। विक्रेता ने बंसल के पांव पकड़ कर दो-तीन साल का समय मांगा और तब तक के लिये 40 हजार रुपये किराया देना तय कर लिया और इस बाबत कानूनी दस्तावेज बनाये गये।

2021 में बंसल को पता चला कि सन् 2015 में क्रेता ने इस प्लॉट के आधे भाग यानी कि 500 वर्ग गज की एक गैर कानूनी रजिस्ट्री अपने नाम करा कर उस पर फ़िर से बैंक लोन ले लिया। इस धोखा-धड़ी के खिलाफ बंसल ने पुलिस अधिक्षक गंगा राम पूनिया को दरखास्त दी जिसे पूनिया द्वारा आर्थिक अपराधा शाखा में भेज दिया गया। वहां के इंचार्ज ने बंसल से एक लाख रुपये की मांग की तो उन्होंने कहा उनका केस तो पूरी तरह से जेनुअन है तो रिश्वत किस बात की?

आज कल समझने वाली बात तो यही है कि जेनुअन केस करने की भी पुलिस को मोटी फीस चाहिये। न देने पर दोषी पार्टी इससे भी कहीं अधिक रकम देकर अपना उल्लू सीधा करवा लेती है। वही इस मामले में हुआ भी।

आर्थिक अपराध शाखा ने इस मामले को क्रिमिनल केस न मान कर सिविल बता दिया। बंसल ने इसकी शिकायत पुनः एसपी पूनिया से की तो उन्होंने केस को रिव्यू करने के लिये नई-नई भर्ती हुई, 2019 बैच की आईपीएस अधिकारी हिमांद्रि कौशिक, एएसपी इन्द्री को सौंप दिया। करीब 6-7 महीने बंसल के चक्कर कटवाने के बाद इस नवयुवती पुलिस अधिकारी ने भी आर्थिक अपराध शाखा के इन्स्पेक्टर की कार्रवाई को उचित ठहरा दिया।

इसके बाद बंसल ने कार्यकुशलता एवं ईमानदारी का ढोल पीटने वाले गृहमंत्री अनिल विज को दरखास्त लगाई। काम को लटकाने व भटकाने के लिये विज ने ज़िला अधिकारियों की एक कमेटी गठित कर दी, यानी भैंस गई पानी में। अब बंसल इस कमेटी के एक सदस्य डीआरओ (जिला राजस्व अधिकारी) के चक्कर लगा रहे हैं। यानी मामले को तुर्त-फुर्त सुलझा कर निपटाने की बजाय बिज साहब ने और भी उलझन की ओर धकेल दिया है। कायदे से तो गृहमंत्री को एसपी पूनिया से जवाब तलब करना चाहिये था कि दिन के उजाले की तरह साफ़-साफ़ दिखाई देने वाला धोखा-धड़ी व जालसाज़ी का मामला सिविल केस कैसे बना दिया गया?

अब देखने वाली बात यह है कि एसपी पूनिया अपने महकमे में चल रही इस रिश्वतखोरी को पकड़ पाने के काबिल नहीं हैं अथवा वे खुद इसके संरक्षक एवं हिस्सेदार हैं, इसका फैसला वे खुद ही करें। रही बात नवनियुक्त एएसपी हिमांद्रि कौशिक की तो वे क्या सीख रही है और कैसी अफ़सर बनेंगी, यह भी एक गंभीर प्रश्न है।

गंगाराम पूनिया, एसपी करनाल

सीवर के सड़े पानी में मनाई दीवाली

फ़रीदाबाद (म.मो.) एनआईटी नम्बर दो ब्लॉक सी और डी में लोगों को गंदे पानी के बीच रहने को मजबूर होना पड़ रहा है। यहां सीवर का पानी सड़कों पर नदी की तरह बह रहा है। दीपावली पर भी लोग अपनी घरों की साफ़ सफ़ाई करके दरवाजे-गेट भी सजा लिये हैं। किंतु जो घर का दरवाजा है वहां सीवर का पानी से बदबू तो आती ही है, इसमें मच्छर भी पनप रहा है जिससे स्वस्थ्य लोग भी बीमार हो गये और जो सही हैं उन्हें भी बीमार होने का खतरा बढ़ता जा रहा हैं।

पहले बरसात का बहाना था। अब तो बरसात भी खत्म हो गई किन्तु नालियों के ओवरफ्लो होने से सीवर का गंदा पानी सड़क पर भर गया है। जिसके कारण लोगों को घरों से बाहर निकलने में काफ़ी परेशानी का सामना करना पड़ता है। सड़कों और गलियों की बात तो दूर है लोगों के घरों के अंदर तक पानी भरा है। पैदल चलने वाले लोगों को गंदे पानी से होकर ही गुजरना पड़ रहा है। रिक्शा या टैम्पू वाले इस गली में जल्दी आना भी नहीं चाहते।

देखने पर अजीब सा लगता है कि दीपावली के अवसर पर दुकानदार सड़क के किनारे सीवर में ही अपनी दूकान को सजा कर बैठ गये और लोग सीवर में ही खड़े होकर खरीदारी की। ऐसी है फ़रीदाबाद स्मार्ट सिटी। आखिर क्या करें इन दुकानदारों की भी मजबूरी है। हां, विधायक सीमा त्रिखा और मेयर सुमन बाला को गालियां देते हैं, गालियां देने से ही इनको क्या होगा?

जिनके घर ऊंचे नहीं है ऊन लोगों के घरों के अंदर तक सीवर का गंदा पानी भरा है, जिसे लोग दीपावली पर घर के साफ़ सफ़ाई तो करके छोटे- छोटे बल्बों और फूल आदि से रंगोली बना कर सजा लिया। किन्तु ये सीवर के गंदा पानी को क्या करें? सीवर की समस्या को लेकर स्थानीय लोगों ने कई बार शिकायत भी की लेकिन समस्या का समधान नहीं हुआ। इन लोगों का कहना है कि सीवर की सफाई हम लोग से सम्भव हो पाती तो खुद कर लेते लेकिन क्या करें? टैक्स तो नगर निगम को देते ही हैं फिर भी समस्या का निदान नहीं हो रहा है।

यहां के स्थानीय लोगो का कहना है कि दीपावली में घरों की कितनी भी साफ-सफ़ाई करें किंतु बाहर से आने पर इसी सीवर में ही पैर रखकर आना-जाना पड़ता है। कोई भी सामान खरीदने जायें तो सीवर में ही खड़े होकर खरीदना है। यहां तक कि लक्ष्मी-गणेश की मूर्ति, फूल, प्रसाद, मिठाई, बर्तन आदि पूजा-पाठ का कोई भी सामान की खरीदारी इसी सीवर में खड़े होकर की।

कुछ लोगों को तो इस गंदगी में निकलने के कारण स्कीन में खुजली, घाव भी हो गया है और बाहर निकलना भी जरूरी है। चार पहिया वाले तो पार हो जाते हैं किंतु दुपहिया वालों और पैदल चलने वालों की बड़ी मुसीबत है। एक तो गंदे पानी में चलना और ऊपर से बड़े वाहनों द्वारा उछाले गये गंदे पानी से सराबोर होना, जाहिर है घर आकर नहाये-धोये बगैर गुजारा नहीं। यहां के स्थानीय लोगों का कहना है कि हम लोगों का यहां घर है तो क्या करें इस नरक में रहना ही है, सीवर को लेकर रिश्तेदारों का भी आना जाना बिल्कुल बंद है। कोई खास जरूरत पड़ने पर ही लोग आते हैं।

सड़क के किनारे थोड़ा ऊपर से लोग आते-जाते थे वहां भी दीपावली पर दुकानदारों ने अपनी दुकान सजा दिया। अब लोगों के पास कोई रास्ता नहीं। दो-चार दिन तो लोग परेशानी झेल भी लेंगे किंतु लगातार सीवर की गंदगी में रहने से कुछ लोग तो बीमार भी हो गये हैं। और जो सही हैं उनका भी कहना है कि गंदगी में आने-जाने से भयंकर बीमारी भी हो सकती है।

कुछ लोगों का कहना है कि हाल ही में निवृत हुई मेयर सुमन बाला ने उन्हें बताया है कि बतौर मेयर उसने तो इस समस्या का समाधान करने के लिये बहुत प्रयास किया था। लेकिन इसके विपरीत स्थानीय विधायक सीमा त्रिखा नहीं चाहती कि यहां के निवासियों को सीवर समस्या से कोई राहत मिल पाये।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 708 सैक्टर-14 फरीदाबाद से प्रकाशित किया।